क्या आप जानते हैं कि प्रभु यीशु ने क्यों कहा:

“इसलिए ध्यान दो कि तुम कैसे सुनते हो।” (लूका 8:18)

यीशु ने यह चेतावनी इसलिए दी, क्योंकि वे जानते थे कि एक विश्वासी भी — जो बाहर से तो दृढ़ दिखाई देता है — केवल इस कारण गिर सकता है कि वह क्या सुनने का चुनाव करता है।

यदि जो कुछ तुम सुनते हो, वह उसकी ओर से नहीं है, तो वह तुम्हें भटका सकता है।

हर बात तुम्हारे कानों या दिल के योग्य नहीं होती।

हम ऐसे समय में जी रहे हैं जब आत्मिक धोखे और अन्धकार का बोलबाला है।

इन अन्तिम दिनों में, तीन बातें हैं जिनमें विशेष समझ-बूझ की ज़रूरत है:

दर्शन
स्वप्न
प्रकाशन (प्रकट होते संदेश)

यदि तुम्हारा मसीही जीवन मुख्य रूप से स्वप्नों, दर्शनों या दूसरों के “प्रकाशनों” पर टिका है — और तुम परमेश्वर के वचन की उपेक्षा कर रहे हो — तो तुम गम्भीर खतरे में हो।

चाहे वे अनुभव सचमुच परमेश्वर से हों या न हों, शास्त्रों को किनारे कर देने से धोखा खाने का खतरा बहुत बढ़ जाता है।

आज लोग इस तरह की बातें कहते हैं:

“मुझे नरक में ले जाया गया और मैंने देखा कि जो लोग कुछ खास टॉफियाँ या कोल्ड-ड्रिंक (जैसे कोका-कोला) पीते हैं, वे यातना में हैं।”
“परमेश्वर ने दिखाया कि जो भी स्त्री कुँवारी बने बिना विवाह करती है, वह व्यभिचारिणी है — और वह केवल उसी पुरुष से विवाह कर सकती है जिससे उसने पहले संबंध बनाए, चाहे वह बाद में ही क्यों न बचाई गई हो।”
“मुझे दर्शन हुआ कि जो कोई रविवार को उपासना करता है, वह नरक में जाएगा।”
“यीशु ने कहा — यदि कोई उड़ने के सपने देखे, तो वह आग के लिए ठहराया गया है।” “यदि तुमने कभी जीवन में कोई चीज़ बेईमानी से ली है — और अब लौटा नहीं सकते — तो जब तक चुका न दो, तुम आग की झील में जाओगे।”
“समुद्र-तट पर तैरना पाप है। जन्म-नियंत्रण का उपयोग करने वाले नरक में जाएंगे।”

और ऐसी बातें यूँ ही चलती जाती हैं…

मान लो तर्क के लिए कि इनमें से कुछ बातें सच भी हों।

तो तुम कैसे जानोगे कि वे सच-मुच परमेश्वर से हैं?

क्या इसलिए कि जिसने बताया वह विश्वसनीय लगता है?

या इसलिए कि बात “सच्ची-सी” लगी?

क्या केवल निजी अनुभव ही सत्य को मापने का पैमाना है?

यदि कोई तुमसे कहे:

“काले-चर्म वाले लोग हाम के शाप के वंशज हैं और स्वर्ग में जाने से पहले उन्हें विशेष रासायनिक प्रक्रिया से अपना रंग हल्का करवाना होगा।”

क्या तुम सिर्फ “प्रकाशन” कहकर इस पर भी विश्वास करोगे?

मेरे भाई, मेरी बहन — यदि तुम परमेश्वर के वचन में बने रहते हो, तो तुम्हारे पास पहले से ही पर्याप्त सत्य है।

शास्त्र पूरे, पर्याप्त और परमेश्वर की प्रेरणा से हैं (2 तीमुथियुस 3:16–17)।

यदि कोई कहे कि उसने समलैंगिकों को नरक में देखा — इसमें चकित होने की बात नहीं — क्योंकि बाइबल पहले ही कहती है:

“क्या तुम नहीं जानते कि अधर्मी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होंगे? धोखा न खाना: न व्यभिचारी, न मूर्तिपूजक,
न व्यभिचार करने वाले, न पुरुष-पुरुष से कुकर्म करने वाले,

न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न बदनाम करने वाले, न ठग —
परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।”

(1 कुरिन्थियों 6:9–10)

जब तुम वचन के अनुसार चलते हो, तो तुम प्रकाश और सुरक्षा में चलते हो।

पर यदि तुम केवल गवाहियों और अलौकिक अनुभवों पर निर्भर रहते हो — बिना उन्हें शास्त्र से परखे — तो अन्ततः तुम भ्रम, भय और अस्थिरता में पड़ जाओगे। सत्य और असत्य मिल-जुल जाएगा — और तुम नहीं जानोगे कि तुम कहाँ खड़े हो। ऐसा व्यक्ति प्रलोभन और पाप में गिरने के लिए विशेष रूप से असुरक्षित होता है।

इसीलिए बाइबल को जानना बिल्कुल आवश्यक है। यीशु ने कहा:

“और तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।”

(यूहन्ना 8:32)

ऑनलाइन गवाहियाँ सुनते समय — खासकर YouTube जैसी जगहों पर — सावधान रहो।

यह भी सोच-समझकर तय करो कि किस उपदेशक और प्रभावशाली व्यक्ति को सुनना है।

यदि तुम्हारा विश्वास परमेश्वर के वचन पर आधारित नहीं है, तो शैतान तुम्हें नकली नींव दे देगा — भावुकता, रहस्यवाद या अन्ध-विश्वास पर बनी हुई।

मेरी बात भी अन्धे-विश्वास से मत मानो।

किसी इंसान पर आँख मूँदकर भरोसा मत करो।

बाइबल पर भरोसा करो — वही पर्याप्त है।

कुछ कहते हैं:

“प्रभु ने मुझसे कहा कि तुम्हारे बाल और नाखून इकट्ठे करके लाल कपड़े में बाँधकर उन पर प्रार्थना करूँ।”

और जब तुम बाइबल से प्रमाण पूछो, तो कहते हैं:

“यह प्रकाशन है! ऐसा किए बिना तुम्हें छुटकारा नहीं मिलेगा।”

यह अत्यन्त ख़तरनाक है —

ऐसी शिक्षाओं को ठुकरा दो।

कुछ और कहते हैं:

“यदि तुम मुझ पर व्यक्तिगत रूप से विश्वास नहीं करोगे, तो उधार उठा लिए जाने (रैप्चर) से चूक जाओगे।”

यह भी झूठ है!

बाइबल स्पष्ट कहती है:

“आत्मा साफ-साफ कहता है कि आने वाले समय में कितने लोग विश्वास से भटक जाएंगे और भूतों की ठगाई तथा दुष्ट आत्माओं की शिक्षाओं के पीछे लग जाएंगे।”

(1 तीमुथियुस 4:1)

जो कुछ सुनते हो, उस पर तुरन्त विश्वास न करो —

जब तक कि तुमने उसे शास्त्र की कसौटी पर परख न लिया हो।

प्रभु हमें अपनी सच्चाई में स्थिर बनाए रखे।

अगर आप चाहें, मैं:

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp